

समाज विकासमाला

गंगाजी

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ८

गंगाजी

गंगा के धरती पर उतरने की रोचक कथा

लेखक
रामचंद्र तिवारी

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५६
सत्साहित्य-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

तीसरी बार : १६५६
मूल्य
छः ग्राना

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा। बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

इस पुस्तक-माला को हमने इन्हीं बातों को सामने रखकर चालू किया है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में पाठकों को सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

तीसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का तीसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसन्द आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनन्द होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

पाठकों से

गंगाजी का नाम आप सबने सुना होगा। बहुतों ने उनके दर्शन भी किये होंगे, उनके जल में स्नान किया होगा। पर आपमें से बहुत-से ऐसे होंगे, जिन्हें गंगा की कथा मालूम न हो। कितनी तपस्या के बाद वह ब्रह्मा के कमण्डल से निकल कर शिवजी की जटाओं में आई और धरती पर बहीं, इसकी कहानी बड़ी रोचक है। यही कहानी इस किताब में सुनाई गई है। इसे पढकर पता चलता है कि बड़े काम के लिए कितनी तपस्या करनी पड़ती है।

हमारे देश की नदियों में गंगाजी की बड़ी मानता है। उनकी यह कहानी हरेक आदमी को जाननी चाहिए।

आप इस माला की सब पुस्तकें अपने पास संभाल कर रक्खें।

—सम्पादक

गंगाजी

: १ :

भगवान राम के कुल में एक राजा हुए हैं सगर, राम से बहुत पहले। वे बड़े वीर थे। बड़े साहसी थे। उनका दबदबा चारों ओर फैला हुआ था। राज जब बहुत दूर-दूर तक फैल गया तो राजा ने यज्ञ किया। बड़ी धूम-धाम रही। गरीबों को भोजन कराया। ऋषियों के तिलक लगाया। मुनियों की सेवा की और घोड़े की पूजा हुई। यह यज्ञ अश्वमेध-यज्ञ था।

पुराने समय में अश्वमेध-यज्ञ करने का रिवाज था। इस यज्ञ को बलवान राजा ही कर सकते थे। इस यज्ञ में होता यह था कि एक घोड़ा पूजा करके छोड़ दिया जाता। घोड़ा जिधर मरजी हो जाता। उसके पीछे राजा की सेना रहती। अगर किसीने उस घोड़े को पकड़ लिया तो सेना लड़कर उसे छुड़ा लेती। जब घोड़ा चारों ओर घूमकर वापस आ जाता तो यज्ञ किया जाता और वह राजा चक्रवर्ती माना जाता।

राजा सगर इसी प्रकार का यज्ञ कर रहे थे।

भारतवर्ष के सारे राजा सगर को चक्रवर्ती मानते थे। पर देवों के राजा इंद्र को सगर की बढ़ती देखकर बड़ी जलन होती थी। जब उसे मालूम हुआ कि सगर अश्व-मेध-यज्ञ करने जा रहे हैं तो चुपके से सगर के पूजा करके छोड़े हुए घोड़े को चुरा ले गया और बहुत दूर कपिल मुनि की गुफा में जाकर बाँध दिया।

दूसरे दिन जब घोड़े को छोड़ने की घड़ी पास आई तो पता चला कि अश्वशाला में घोड़ा नहीं है।

सबके चेहरे उतर गये। यज्ञ-भूमि में शोक छा गया।

: २ :

पहरेदारों ने खोजा, सिपाहियों ने खोजा, उनके अफसरों ने खोजा, पास खोजा और दूर खोजा। पर घोड़ा न मिला। घोड़े का शरीर चांद की चांदनी की भांति सफेद था और उसके दोनों कान नाग-नागिन की भांति काले थे। उसे देखने से ऐसा मालूम होता था जैसे कि एक बड़े सफेद कमल के फूल के ऊपर दो भौंरे बैठे हुए हों।

घोड़ा नहीं मिला तो महाराज के पास समाचार पहुंचा। महाराज ने सुना और सोच में पड़ गये। रातों-रात घोड़े को इतनी दूर निकाल ले जाना मामूली चोर

का काम नहीं है।

राजा सगर की बड़ी रानी का एक बेटा था। उनका नाम था असमंजस। असमंजस बालकों को दुखी करता था और उनको मार डालता था। सगर ने लोगों की पुकार सुनी और अपने बेटे असमंजस को देश से निकाल दिया। असमंजस का पुत्र था अंशुमान।

राजा सगर की छोटी रानियों के बहुत-से बेटे थे। कहा जाता है कि ये साठ हजार थे। सगर के ये पुत्र बहुत बलवान् थे। बहुत चतुर थे, और तरह-तरह की विद्याओं को जाननेवाले थे। जो चाहते थे कर सकते थे।

जब सिपाही घोड़े का पता लगा कर हार गये तो महाराज ने अपने साठ हजार पुत्रों को बुलाया और कहा—"पुत्रो, चोर ने सूर्यवंश का अपमान किया है। तुम सब जाओ और घोड़े का पता लगाओ।"

पुत्रों ने पिता की जय बोली और घोड़े की खोज में चल दिये। उनकी भुजाएं फड़क रही थीं, आंखें लाल थीं, चेहरों पर दमक थी, चाल में तेजी थी, वे चोर को पकड़ लेने के लिए उतावले हो रहे थे। लोगों ने उनको जाते देखा। सबने उनका जय-जयकार किया। लोग

कहने लगे कि अब चोर की खैर नहीं है। उसे अपनी करनी का फल मिलेगा। वह चाहे कोई भी हो, राजकुमारों के कोप में भुनकर राख हो जायगा।

राजकुमारों ने घोड़े को खोजना शुरू किया। उसे झोंपड़ियों में खोजा, महलों में खोजा, खेड़ों में खोजा, नगलों में खोजा, गाँवों और कस्बों में खोजा, नगरों और राजधानियों में खोजा। साधुओं के आश्रमों में गये, तपोवनों में गये और योगियों की गुफाओं में पहुँचे। पर्वतों के बरफीले सफेद शिखरों पर पहुँचे और नीचे उतर आये। वन-वन घूमे। पेड़ों के नीचे देखा। एक-एक कुंज और एक-एक लता की तलाशी ली। अंगुल-अंगुल धरती छान डाली, पर यज्ञ का घोड़ा उनको दिखाई नहीं दिया।

वे खोजते-खोजते धरती के छोर तक जा पहुंचे। अब आगे पानी-ही-पानी था। नीला-नीला पानी, जो दूर जाकर नीले आकाश से छू गया था। यह समुद्र था। इसकी थाह का पता न था। पर राजकुमार घबराये नहीं। वे पानी में उतर गये। डुबकी लगाकर वे किनारे की गुफाओं में देख आये। तैर कर वे दूर-दूर तक की खबर ले आये। जहां उनको गुफा का संदेह हुआ, वहां खोद-खोद कर देखा। पर घोड़ा वहां भी

नहीं मिला। क्योंकि सगर के पुत्रों ने समुद्र की इतनी खोजबीन की, इसलिए समुद्र 'सागर' भी कहलाने लगा।

जब घोड़ा नहीं मिला तो राजकुमारों का दिल बैठने लगा, पर वे हारे नहीं। खोजने की धुन में लगे रहे। वे बंगाल के किनारे सागर से निकले और फिर थल पर खोजना शुरू किया। वे खोजते जाते थे और आगे बढ़ते जाते थे। हर जगह को ठोक-बजाकर देखते थे। आवाजों को कान लगाकर सुनते थे। सोचते थे और लौट-लौट कर खोजते थे।

वे आगे बढ़ रहे थे कि हवा चल पड़ी। एक लता हिली और वे ठिठक गये। लता के पीछे कुछ था, जिसने उनको रोक लिया। लता हटाई गई। एक शिला दिखाई पड़ी। शिला को परखा। गया मालूम हुआ कि उसे किसीने वहाँ जमा दिया है। बस, राजकुमारों में एक लहर दौड़ गई। औजार आ गये। शिला हटाई जाने लगी। देखते-देखते शिला के पीछे एक गुफा का मुँह निकल आया। राजकुमारों ने शोर मचाया। वे गुफा में घुस गये। थोड़ी दूर अँधेरे में चले और फिर उजाले में आ पहुँचे। यहाँ जो देखा तो चकित हो गये। उनकी आँखें खुल गईं।

उन्होंने देखा कि एक बहुत पुराना पेड़ है। उसके

नीचे एक दुबला-पतला ऋषि बैठा है। वह अपनी समाधि में लीन मालूम होता है। ऋषि के पीछे कुछ दूर पर एक और पेड़ है। उसके तने से एक घोड़ा बंधा हुआ है। कुछ राजकुमार दौड़कर घोड़े के पास गये। घोड़ा पहचान लिया गया। यह वही घोड़ा था। राजकुमारों के पिता के यज्ञ का घोड़ा। घोड़े को पाया, ऋषि को देखा, तो उनका क्रोध भड़क उठा।

एक ने कहा, "यह चोर है।"

दूसरा बोला, "यह ऋषि नहीं है, धोखेबाज़ है!"

तीसरा चीखा, "यह हमसे डरकर ढोंग रचाता है। यह पाखंडी है!"

चौथे ने कहा, "हम इसे दंड देंगे!"

पाँचवें ने कहा, "हम इसकी पसली-पसली अलग कर देंगे!"

राजकुमारों ने बहुत शोर मचाया। उनमें से एक ऋषि को खींच लेने के लिए आगे बढ़ गया। उसने अपना हाथ बढ़ाया। उसका हाथ ऋषि के शरीर पर पड़ा कि ऋषि की देह कांपी और वे समाधि से जागे।

उनकी आँखें खुलीं। उनकी आँखों में तेज भरा था। वह तेज राजकुमारों के ऊपर पड़ा तो गजब हो गया। महा बलवान राजकुमार तिनकों से भी गये-

बीते हो गये। वे भकभका कर जल उठे। जब ऋषि की आँखें पूरी तरह से खुलीं तो उन्होंने अपने सामने बहुत-सी राख की ढेरियां पड़ी पाईं। ये राख की ढेरियां साठ हजार थीं।

: ३ :

साठ हजार राजकुमारों को गये बहुत दिन हो गये। उनकी कोई खबर न मिली। राजा सगर की चिंता बढ़ने लगी। ऐसे बलवान राजकुमारों का क्या हुआ? वे कहां समा गये? राजा सोच रहे थे कि एक दूत ने आकर प्रणाम किया।

राजा ने पूछा, "क्या समाचार लाये हो?"

दूत बोला, "महाराज की जय हो!"

राजा ने कहा, "जो कुछ कहना हो, कहो। डरो मत।"

दूत बोला, "महाराज, बंगाल से कुछ मछुवे आये हैं, उनसे मैंने अभी-अभी सुना है. . .।"

राजा ने कहा, "बोलो, साफ-साफ बोलो।"

दूत बोला, "मछुओं ने राजकुमारों को एक गुफा में घुसते देखा है। पर. . .।"

राजा ने पूछा, "पर क्या?"

दूत बोला, "महाराज, वे राजकुमार अभीतक उस

गुफा से निकल कर नहीं आये हैं।"

सगर ने यह समाचार सुना। वे सोच में पड़ गये। सोच में पड़ने की बात ही थी। राजकुमार गुफा में गये और लौट कर नहीं आये। उनके राजकुमार बहुत बलवान हैं। बड़ी सूझ-बूझ वाले हैं। पर यह संसार है। यहां एक-से-एक चतुर और चालाक पड़े हुए हैं। हो-न-हो राजकुमार किसी टेढ़े के पाले पड़ गये हैं। वे किसी बड़ी मुसीबत में फँस गये हैं। उनको विपत से उबारने का उपाय करना चाहिए। राजा ने ऊँच-नीच सोचा, आगा-पीछा सोचा और अपने पोते अंशुमान को बुलाया।

अंशुमान ने आकर बाबा को प्रणाम किया। सगर ने आशीष दी और कहा, "बैठो !"

अंशुमान बैठ गया तो बूढ़े सगर ने उसके सिर पर हाथ फेर कहा, "अंशुमान !"

अंशुमान ने बाबा की आँखों में देखा और कहा, "बाबा ?"

सगर का दिल भर आया। वह बोला, "अंशुमान ! तुम मेरी आँखों के तारे हो। मेरे बुढ़ापे के सहारे हो बेटा !"

अंशुमान ने बाबा के काँपते हाथों को पकड़ लिया। उनको अपने गरम-गरम हाथों में दबाया। माथे लगाया।

बोला, "बाबा, आपको क्या चिंता है ? आप इतने घब-राये हुए क्यों हैं ?"

सगर की आँखों में आँसू आ गये। उनका गला रुंध गया। वह बोल नहीं सके।



सगर ने कहा, "बेटा अंशुमान, तुम मेरी आँखों के तारे हो; बुढ़ापे के सहारे हो।"

अंशुमान ने कहा, "बाबा ! मैं अब बालक नहीं हूं। आप मुझे आज्ञा दीजिये। फिर देखिये आपका यह पोता किस तरह आपकी आज्ञा का पालन करता है।"

सगर ने अंशुमान का माथा चूमकर उसे छाती से

लगा लिया और फिर कहा, "बेटा, तुम्हारे साठ हजार चाचा . . ."

अंशुमान ने बात काट कर कहा, "मेरे चाचा बड़े बलवान और समझदार हैं। उनके लिए आप किसी प्रकार की चिंता न कीजिये।"

सगर ने कहा, "बेटा अंशुमान, मैं भी अपने पुत्रों के बल और साहस को भली-भांति जानता हूं। मैं उनपर पूरा भरोसा करता हूं। पर मुझे जो खबर मिली है, उसने मेरे भरोसे को हिला दिया है।"

अंशुमान ने पूछा, "बाबा, वह खबर क्या है?"

सगर ने बताया कि उसके साठ हजार चाचा बंगाल में सागर के किनारे एक गुफा में घुसते हुए देखे गये हैं, पर उसमें से निकलते हुए उनको अभीतक किसीने नहीं देखा है।"

अंशुमान का चेहरा खिल उठा। वह बोला, "बस बाबा, यही समाचार है। इसमें तो कोई डर की बात मुझे दिखाई नहीं देती। यदि आप आज्ञा दें तो मैं जाऊं और पता लगाऊं। मेरे चाचा किसी जरूरी काम को पूरा करने में लगे होंगे।"

सगर बोले, "अंशुमान, मैं भगवान से मनाता हूं कि तेरी बात सच हो। जा, अपने चाचाओं का पता

लगा। जा, अंशुमान, मेरे बुढ़ापे के सहारे जा।"

जब अंशुमान जाने लगा तो बूढ़े राजा सगर ने उसे फिर छाती से लगाया, उसका माथा चूमा और लाखों आशीष देकर उसे विदा किया।

अंशुमान चतुर था और सावधान था। वह अपने बाबा के दुःख से दुखी हुआ। उसके चाचा उसे कितना चाहते हैं। क्या अब वह अपने चाचाओं से मिल पायेगा ? उसके चाचाओं को क्या हो गया ? वे उस गुफा में गये तो निकलकर क्यों नहीं आये ? वह कैसी गुफा है ? क्या उस गुफा में अंधेरा-ही-अंधेरा है ? क्या उस गुफा में उजाला भी है ? उस गुफा में क्या है, जिसमें जाकर उसके चाचा अटक गये ? एक-दो नहीं साठ हजार। महा बलवान राजा सगर के महा बलवान साठ हजार बेटे ! वह कौन बलवान है जिसने उनको अटका लिया है ? वह कौन चालाक है जिसने उनको फँसा लिया है ? पता नहीं उस गुफा में क्या है ? क्या यज्ञ का घोड़ा भी उसी गुफा में है ? क्या वे उसीको छुड़ाने के लिए उस गुफा के भीतर लड़ाई लड़ रहे हैं ?

अंशुमान इधर-उधर नहीं घूमा। उसने पता लगाया और उसी गुफा के दरवाजे पर पहुँचा। गुफा के दरवाजे पर वह ठिठक गया। उसका शरीर

एक बार काँप उठा। उसे डर नहीं लगा; पर फिर भी मन में उठा कि क्या वह इस गुफा में जाकर फिर बाहर आ सकेगा ?

चाचाओं का दुलार याद आया। उनकी ममता मन में उमड़ी। बाबा के आँसू सामने आगये। अंशुमान को अनुभव हुआ कि वह सबसे छोटा है। वह सबसे जिम्मेदार है। काल उसके सामने है। वह उससे मुँह नहीं मोड़ेगा। उसने कुल के देवता सूर्य को प्रणाम किया और गुफा के भीतर पैर रखा। अंधेरे से उजाले में पहुँचा तो ठिठक कर खड़ा हो गया। उसने जो देखा, वह अद्भुत था। उसने अपनी आँखों को मला और देखा। फिर मला और फिर देखा। पर जो पहली बार देखा था वही हर बार दिखाई पड़ा। उसने अपना सिर झुका दिया।

अंशुमान ने देखा कि दूर-दूर तक राख की ढेरियां फैली हुई हैं, ऐसी कि किसीने सजा कर फैला दी हों। इतनी ढेरियां किसने लगाईं ? क्यों लगाईं ? वह उन ढेरियों को बचाता आगे बढ़ा। वह थोड़ा ही आगे गया था कि एक गम्भीर आवाज़ उसे सुनाई दी।

"आओ, बेटा अंशुमान, यह घोड़ा बहुत दिनों से

राह देख रहा है।"



"आओ बेटा अंशुमान, यह घोड़ा तुम्हारी राह देख रहा है।"—महर्षि कपिल ने कहा।

अंशुमान चौंका। उसने सामने देखा कि एक दुबले-पतले ऋषि हैं जो एक घोड़े के निकट खड़े उसपर हाथ फेर रहे हैं। इनको मेरा नाम कैसे मालूम हो गया? यह जरूर बहुत पहुँचे हुए हैं। अंशुमान रुका। उसने धरती पर सिर टेक कर ऋषि को नमस्कार किया।

ऋषि बोले, "बेटा अंशुमान, तुम भले कामों में लगो। आओ। मैं कपिल तुमको आशीष देता हूं।"

अंशुमान ने उन महान कपिल को बारंबार प्रणाम किया।

कपिल बोले, "जो होना था, वह हो गया।"

अंशुमान ने हाथ जोड़ कर पूछा, "क्या हो गया, ऋषिवर ?"

ऋषि ने राख की ढेरियों की ओर इशारा किया, "ये ढेरियाँ साठ हजार हैं, अंशुमान।"

अंशुमान के मुंह से चीख़ निकल गई। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली।

ऋषि ने समझाया, "धीरज धरो बेटा, मैंने जब आँखें खोलीं तो इनको फूस की तरह जलते पाया। उनका अहंकार उभर आया था। वे समझदारी से दूर हट गये थे। उन्होंने सोच-विचार छोड़ दिया था। वे अधरम पर थे। अधरम बुरी चीज़ है। पता नहीं कब भड़क पड़े। उनका अधरम भड़का और वे जल गये। मैं देखता रह गया। कुछ न कर सका।"

अंशुमान ने कहा, "ऋषिवर !"

कपिल बोले, "बेटा, दुखी मत होओ। घोड़े को ले जाओ और अपने बाबा को धीरज बंधाओ। महाप्रतापी राजा सगर से कहना कि आत्मा अमर है।

देह के जल जाने से उसका कुछ नहीं बिगड़ता।"

अंशुमान ने कपिल के सामने सिर झुकाया और कहा, "ऋषिवर! मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा। पर मेरे चाचाओं की मौत आग में जलने से हुई है। यह अकाल मौत है। उनको शांति कैसे मिलेगी?"

कपिल ने कुछ देर सोचा और बोले, "बेटा शांति का उपाय तो है, पर काम बहुत कठिन है।"

अंशुमान ने सिर झुकाकर कहा, "ऋषिवर! सूर्यवंशी कामों की कठिनता से नहीं डरते।"

कपिल बोले, "गंगाजी धरती पर आयें और उनका जल इन राख की ढेरियों को छुए तो तुम्हारे चाचा तर जायंगे।"

अंशुमान ने पूछा, "गंगाजी कौन हैं और कहां रहती हैं?"

कपिल ने बताया, "गंगाजी विष्णु के पैरों के नखों से निकली हैं और ब्रह्मा के कमण्डल में रहती हैं।"

अंशुमान ने पूछा, "गंगाजी को धरती पर लाने के लिए मुझे क्या करना होगा?"

ऋषि ने कहा, "तुमको ब्रह्मा की विनती करनी होगी। जब ब्रह्मा तप पर रीझ जायंगे तो प्रसन्न

होकर गंगाजी को धरती पर भेज देंगे। उससे तुम्हारे चाचाओं का ही भला नहीं होगा, और भी करोड़ों आदमी तरह-तरह के लाभ उठा सकेंगे।"

अंशुमान के मन में एक मजबूती आ गई। उसका चेहरा चमकने लगा। उसने हाथ उठा कर वचन लिया कि जबतक गंगाजी को धरती पर उतार नहीं लेंगे, तबतक मेरे वंश के लोग चैन नहीं लेंगे।

कपिल ने अपना आशीष दिया।

: ४ :

अंशुमान सूरज के वंश के थे। इसी कुल के सत्य-वादी राजा हरिश्चन्द्र को छोटे-बड़े सब जानते हैं। अंशुमान ने ब्रह्माजी की विनती की। बहुत कड़ा तप किया। तप में अपना शरीर घुला दिया। अपनी जान दे दी, पर ब्रह्माजी प्रसन्न नहीं हुए।

अंशुमान के बेटे हुए राजा दिलीप। दिलीप ने पिता के वचन को अपना वचन समझा। उनकी बात को अपनी बात माना। वे भी तप करने में जुट गए। बड़ा भारी तप किया। ऐसा तप किया कि ऋषि और मुनि चकित हो गये। उनके सामने सिर

झुका दिया। पर ब्रह्मा उनके तप पर भी नहीं रीझे।

दिलीप के बेटे थे भगीरथ। भगीरथ के सामने बाबा का वचन था, पिता का तप था। एक लगन थी। एक धुन थी। उसके सामने एक चुनौती थी। ब्रह्मा के आसन को डुलाना है। ब्रह्मा के दिल को हिलाना है। ब्रह्मा को अपने ऊपर रिझाना है। उनके दिल में पसीज पैदा करनी है। भगीरथ ने तय किया कि मैं यह करूंगा, जरूर करूंगा। भगीरथ ने मन को चारों ओर से समेटा और तप में लगा दिया। वह थे और था उनका तप। बाहर-भीतर तप, ऊपर-नीचे तप, अगल-बगल तप, इधर-उधर तप, तप, तप, तप।

भगीरथ तप के रूप हो रहे थे और तप जैसे भगीरथ बन रहा था।

तभी देवताओं को खबर लगी। देवों ने सोचा: "गंगाजी हमारी हैं। जब वे उतर कर धरती पर चली जायंगी तो हमें कौन पूछेगा?"

एक ने कहा, "हम भगीरथ का तप सफल नहीं होने देंगे।"

दूसरा बोला, "कभी नहीं, कभी नहीं!"

तीसरा बोला, "हमारी उर्वशी भगीरथ के तप को

ठंडा कर देगी।"

चौथा बोला, "और हमारी अलका उसे पानी बना कर बहा देगी।"

देवताओं ने सलाह की। ऊँच-नीच सोची और फिर उर्वशी तथा अलका को बुलाया गया। उनसे कहा गया कि जाओ, राजा भगीरथ के पास जाओ और ऐसा करो कि वह अपने तप से डगमगा जाय। अपनी राह से विचल जाय और छोटे-मोटे सुखों के चंगुल में फँस जाय।

अलका और उर्वशी ने माथा टेककर देवताओं का आशीष लिया और भगीरथ की ओर चलीं।

अलका ने भगीरथ को देखा। उर्वशी ने भगीरथ को देखा। एक सादा-सा आदमी अपनी धुन में डूबा। अपनी लव में लीन। अपने काम में लगा हुआ। जिसे बात करने का समय नहीं, सिर उठाने की फुरसत नहीं। उन दोनों ने भगीरथ को एक बार फिर से देखा और अपना जाल फैलाना शुरू किया।

उन दोनों ने अपनी माया फैलाई। भगीरथ के चारों ओर बसंत बनाया। चिड़ियाँ चहकने लगीं। कलियाँ चटकने लगीं। मंद पवन बहने लगी। लतायें झूमने लगीं। पेड़ों को चूमने लगीं। कुंजें मुस्काने लगीं। धीरे-

धीरे गाने लगीं। कुंज-गली महक उठीं। यौवन से दमक उठीं। दोनों अप्सरायें नाचीं। माया बखेरी। मोहिनी फैलाई और चाहा कि भगीरथ के मन को मोड़ दें। भगीरथ के तप को तोड़ दें।

पर वह नहीं हुआ।

जब उर्वशी का लुभाव बढ़ा तो भगीरथ के तप का ओज बढ़ा और जब अलका का रिझाव बढ़ा तो भगीरथ के तप का तेज बढ़ा। दोनों पचीं, हारीं और लौट गईं।

उनके लौटते ही ब्रह्मा पसीज गये। वे सामने आये



ब्रह्माजी बोले, "ऐसा ही होगा भगीरथ!"

ग्रौर बोले, "बेटा, वर माँग ! वर माँग !"

भगीरथ ने ब्रह्माजी को प्रणाम किया ग्रौर बोले, "यदि ग्राप मुझसे प्रसन्न हैं तो गंगाजी को धरती पर भेजिये ।"

भगीरथ की बात सुनकर ब्रह्माजी ने क्षण भर सोचा, फिर बोले, "ऐसा ही होगा, भगीरथ ।"

ब्रह्माजी के मुँह से यह वचन निकले कि उनके हाथ का कमण्डल बड़े जोर से काँपने लगा। ऐसा लगता था जैसे कि वह फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा ।

थोड़ी देर बाद उसमें से एक सुर निकला, "ब्रह्मा, यह तुमने क्या किया ? तुमने भगीरथ को क्या वरदान दे डाला ?"

ब्रह्मा बोले, "मैंने ठीक ही किया है, गंगा !"

गंगा चौंकीं । बोलीं, "तुम मुझे धरती पर भेजना चाहते हो ग्रौर कहते हो कि तुमने ठीक ही किया है।"

"हां, देवी !" ब्रह्मा ने कहा ।

"कैसे ?" गंगा ने पूछा ।

ब्रह्मा ने बताया, "देवी, ग्राप संसार का दुःख दूर करने के लिए पैदा हुई हैं । ग्राप ग्रभी मेरे कमण्डल में बैठी हैं । ग्रपना काम नहीं कर रही हैं ।"

गंगा ने कहा, "ब्रह्मा, धरती पर पापी रहते हैं,

पाखंडी रहते हैं। पतित रहते हैं। तुम मुझे उन सबके बीच में भेजना चाहते हो? बताओ ब्रह्मा, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

ब्रह्मा बोले, "देवी, आप बुरे को भला बनाने के लिए बनी हैं। पापी को उबारने के लिए बनी हैं। पाखंड मिटाने के लिए बनी हैं। पतित को तारने के लिए बनी हैं। कमजोरों को सहारा देने के लिए बनी हैं और नीचों को उठाने के लिए बनी हैं।"

गंगा ने कहा, "ब्रह्मा!"

ब्रह्मा बोले, "देवी, बुरों की भलाई करने के लिए तुमको बुरों के बीच रहना होगा। पापियों को उबारने के लिए पापियों के बीच रहना होगा। पाखंड को मिटाने के लिए पाखंड के बीच रहना होगा। पतितों को तारने के लिए पतितों के बीच रहना होगा। कमजोरों को सहारा देने के लिए कमजोरों के बीच रहना होगा और नीचों को उठाने के लिए नीचों के बीच निवास करना होगा। तुम अपने धरम को पहचानो, अपने करम को जानो।"

गंगा थोड़ी देर चुप रहीं। फिर बोलीं, "ब्रह्मा, तुमने मेरी आंखें खोल दी हैं। मैं धरती पर जाने को तैयार हूं। धरती पर मुझे संभालेगा कौन?"

भगीरथ ने ब्रह्मा से पूछा, "आप ही बताइये।"

ब्रह्मा बोले, "तुम भगवान शिव को प्रसन्न करो। यदि वे तैयार होगये तो गंगा को संभाल लेंगे और गंगा धरती पर उतर आयंगी।"

ब्रह्मा उपाय बता कर चले। भगीरथ अब शिव को रिझाने के लिए तप करने लगे।

: ५ :

भगवान शिव को कौन नहीं जानता ? गांव-गांव में उनके शिवाले हैं, वे भोले बाबा हैं। उनके हाथ में त्रिशूल है, सिर पर जटा है, माथे पर चांद है। गले में सांप हैं। शरीर पर भभूत है। वे शंकर हैं। महादेव हैं। औढर दानी हैं। वे सदा देते रहते हैं और सोचते रहते हैं कि लोग और मांगें तो और दें। भगीरथ ने विनती की। बड़े भक्ति-भाव से विनती की। हिमालय के कैलाश पर निवास करनेवाले शंकर रीझ गये। भगीरथ के सामने आये और अपना डमरू खड़खड़ा कर बोले, "मांग बेटा, क्या मांगता है।"

भगीरथ ने हाथ जोड़कर धरती पर सिर टेका। बोले, "भगवान् शंकर की जय हो! गंगामैया धरती पर उतरना चाहती हैं, भगवन्! वे कहती हैं . . .।"

शिव ने भगीरथ को आगे नहीं बोलने दिया।

आप बोले, "भगीरथ, तुमने बहुत बड़ा काम किया है। मैं सब बातें जानता हूं। तुम गंगा से विनती करो कि वे धरती पर उतरें। मैं उनको अपने माथे पर धारण करूंगा।"

भगवान शिव ने उनके काम में सहारा दिया। उनके काम को भला बताया। इससे भगीरथ खुश हुए। बहुत खुश हुए। उनकी छाती फूल उठी।

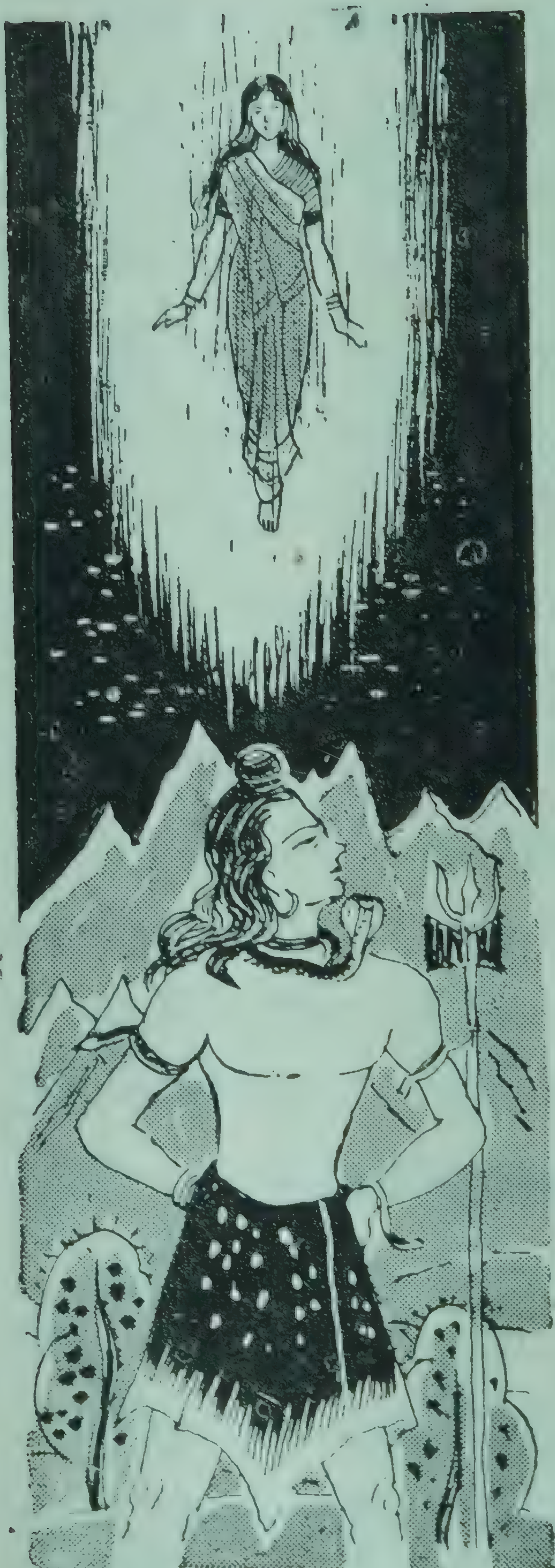
भगीरथ ने आंखें ऊपर उठाईं। हाथ जोड़े और गंगाजी से कहने लगे, "मां, धरती पर आइये। मां, धरती पर आइये। भगवान् शिव आपको संभाल लेंगे।"

भगीरथ गंगाजी की विनती में लगे और उधर भगवान शिव गंगा को संभालने की तैयारी करने लगे। उन्होंने अपनी जटा खोल डाली, उनको फैलाया। उनमें गुलझटों पर गुलझटें डालीं। उनमें पेंच-पर-पेंच डाले। उनको ऐसा जटिल बनाया कि वे भूल-भुलैयां बन गईं।

गंगा ने ऊपर से देखा कि धरती पर शिव खड़े हैं। उनकी जटाएं खुली हुई हैं। बिखरी हुई हैं। देखने में वे छोटे-से लगते हैं। बहुत छोटे-से। वे मुस्काईं। ये शिव और मुझे संभालेंगे? मेरे वेग को संभालेंगे? मेरे तेज को संभालेंगे? इनका इतना

साहस ? मैं इनको बता दूंगी कि गंगा को संभालना सरल काम नहीं है।

भगीरथ ने विनती की। शिव होशियार हुए और गंगा आकाश से टूट पड़ीं। गंगा उतरीं तो आकाश सफेदी से भर गया। पानी की फुहारों से भर गया। रंग-बिरंगे बादलों से भर गया। गंगा उतरीं तो आकाश में शोर हुआ। घनघोर हुआ, ऐसा कि लाखों-करोड़ों बादल एक साथ गरज उठे हों, लाखों करोड़ों तूफान एक साथ गरज उठे हों। गंगा उतरीं तो ऐसी उतरीं कि जैसे आकाश से तारा गिरा हो, अंगारा गिरा हो,



गंगा ने ऊपर से देखा कि शिव नीचे खड़े हैं।

बिजली गिरी हो। उनकी कड़क से आसमान कांपने लगा। दिशाएं थरथराने लगीं। पहाड़ हिलने लगे और धरती डगमगाने लगी। गंगा उतरीं तो देवता डर गये। काम थम गये। सबने नाक-कान बंद कर लिये और दांतों तले उंगली दबा ली।

गंगा उतरीं तो भगीरथ की आंखें बंद हो गईं। वे शांत रहे। भगवान का नाम जपते रहे। थोड़ी देर में धरती का हिलना बंद हो गया। कड़क शांत हो गई और आकाश की सफेदी गायब होगई।

भगीरथ ने देखा कि सामने शिव खड़े हैं। वैसे ही जटा फैलाये। वैसी ही जटा बखेरे। पर गंगाजी का कहीं पता नहीं है।

: ६ :

भगीरथ घबरा गये। चकित रह गये। गंगा कहां गईं? क्या भगवान शिव गंगा को नहीं संभाल सके? पर ऐसा तो हो नहीं सकता। तो फिर?

तब भगीरथ ने भोले भगवान की जटाओं में गंगाजी के लहराने का सुर सुना। भगीरथ को ज्ञान हुआ कि गंगाजी शिव की जटा में फंस गई हैं। वे उमड़ती हैं। उसमें से निकलने की राह खोजती हैं। पर राह है कि

मिलती नहीं है ! गंगाजी घुमड़-घुमड़कर रह जाती हैं। बाहर नहीं निकल पातीं।

भगीरथ समझ गये। वे जान गये कि गंगाजी भोले बाबा की जटा में कैद हो गई हैं।

भगीरथ ने भोले बाबा को देखा। वे शांत खड़े थे। भगीरथ ने उनके आगे घुटने टेके और हाथ जोड़कर बैठ गये और बोले, "हे कैलाश के वासी, आपकी जय हो ! आपकी जय हो ! आप मेरी विनती मानिये और गंगाजी को छोड़ दीजिये !"

भगीरथ ने बहुत विनती की तो शिव शंकर रीझ गये। उनकी आंखें चमक उठीं। हाथ से जटा को झटका दिया तो पानी की एक बूंद धरती पर गिर पड़ी।

बूंद धरती पर शिलाओं के बीच गिरी, फूली और धारा बन गई। वह उमड़ी और बह निकली। उसमें से कलकल सुर निकलने लगा। उसकी लहरें उमंग-उमंग कर किनारों को छूने लगीं। गंगा धरती पर आ गईं। भगीरथ ने जोर से कहा, "गंगामाई की जय !"

गंगामाई ने कहा, "भगीरथ, रथ पर बैठो और मेरे आगे-आगे चलो।

भगीरथ रथ पर बैठे। आगे-आगे उनका रथ चला

पीछे-पीछे गंगाजी बहती हुई चलीं। वे हिमालय की शिलाओं में होकर आगे बढ़े। घने वनों को पार किया और मैदान में उतर आये। ऋषिकेश पहुँचे और हरिद्वार आये। आगे बढ़े तो गढ़मुक्तेश्वर पहुँचे।

आगे-आगे भगीरथ का रथ चल रहा था और पीछे-पीछे गंगाजी बहती आ रही थीं। गंगाजी ने पूछा, "क्यों भगीरथ, क्या मुझे तुम्हारी राजधानी के दरवाजे पर भी चलना होगा?"

भगीरथ ने हाथ जोड़कर कहा, "नहीं माता, हम आपको जगत की भलाई के लिए धरती पर लाये हैं। अपनी राजधानी की शोभा बढ़ाने के लिए नहीं।"

गंगा बहुत खुश हुई। बोलीं, "भगीरथ, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं। आज से मैं अपना नाम भी भागीरथी रख लेती हूं।"

भगीरथ ने गंगामाई की जय बोली और वे आगे बढ़े। सोरों, इलाहाबाद, बनारस, पटना होते हुए कपिल के आश्रम पहुंचे। साठ हजार राख की ढेरियां उनके पवित्र जल में डूब गई। वे आगे बढ़ीं तो उनको सागर दिखाई दिया। सागर को देखते ही वे खिल-खिला कर हंस पड़ीं। और बोलीं, "भगीरथ, बेटा, अब तुम लौट जाओ। मैं यहीं सागर में विश्राम करूंगी।"

और तब से गंगा आकाश से हिमालय पर उतरती हैं। सत्रह सौ मील धरती सींचती हुई सागर में विश्राम करने चली जाती हैं। वे कभी थकती नहीं अटकती नहीं। वे तारती हैं, उबारती हैं और भलाई करती हैं। यही उनका काम है। वे इसमें सदा लगी रहती हैं।

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शवरी
११. गांव सुखी हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियाँ
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तन्दुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियाँ
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो सेवा क्यों ?
४०. कैलास मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना